हिन्दी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ

INCOIS

भारतीय राष्ट्रीय महासागर सूचना सेवा केंद्र

पृथ्वी प्रणाली विज्ञान संगठन - भारतीय राष्ट्रीय महासागर सूचना सेवा केन्द्र (पृ.प्र.वि.सं.-इंकोइस) पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, भारत सरकार की एक स्वायत्त संस्था है जो 35 करोड़ तटीय आबादी, विशेषकर 70 लाख मछुआरों के लिए समुद्री-विज्ञान और प्रोद्योगिकी के द्वारा महासागरीय सलाहकारी सेवाएँ प्रदान करता है। पृ.प्र.वि.सं.-इंकोइस का मुख्य लक्ष्य महासागरीय प्रेक्षणों एवं संकेन्द्रित अनुसंधान द्वारा समाज, उद्योग, सरकारी अभिकरणों और वैज्ञानिक समुदाय को यथासंभव, श्रेष्ठतम महासागरीय आँकड़ों, सूचना एवं सलाहकारी सेवाएँ प्रदान करना है।

प्रमुख गतिविधि

- संभाव्य मत्स्यग्रहण क्षेत्र सलाहकारी सेवाएँ
- महासागर स्थिति पूर्वानुमान
- सूनामी तथा तूफानी लहरों की पूर्व चेतावनी प्रणाली
- महासागरीय प्रेक्षण प्रणालियाँ
- महासागर मॉडलिंग
- उपग्रह तटीय एवं समुद्र वैज्ञानिक अनुसंधान
- वेब आधारित समुद्र आँकड़ा, सूचना एवं सलाहकारी सेवाएँ
- तटीय भूस्थानिक अनुप्रयोग
- मूल्य योजित सेवाएँ
- हिन्द महासागर वैश्विक समुद्री प्रेक्षण प्रणाली
- परिचालन समुद्र विज्ञान के लिए अंतरराष्ट्रीय प्रशिक्षण केन्द्र

भारतीय राष्ट्रीय महासागर सूचना सेवा केंद्र
(पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, भारत सरकार)
ओशियन वैली, प्रगतिनगर बीओ, निजामपेट एसओ, हैदराबाद-500090
दूरभाष:91-(0)40-23895000/23886000, फैक्स:91-(0)40-23895001
ई-मेल: director@incois.gov.in ,वेबसाइट: http://www.incois.gov.in

Page NO :06

डेली हिन्दी मिलाप, हैदराबाद 14/09/2013

'विज्ञान के प्रचार-प्रसार में हिन्दी सशक्त भाषा'

हैदराबाद, 13 सितम्बर-(मिलाप ब्यूरो) स्थानीय भारतीय राष्ट्रीय महासागर सेवा केन्द्र (इंकॉइस) में आयोजित राजभाषा हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह के मुख्य अतिथि एवं पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय की हिन्दी सलाहकार समिति के सदस्य डॉ. डी. डी. ओझा ने कहा कि पर्यावरण में अदृश्य या इनडोर प्रदूषण अति घातक है। उन्होंने बताया कि वर्तमान सदी ने ध्वनि, तरंग व घरेलू प्रदूषण स्वास्थ्य के खतरे बने हुए हैं। अत: जनमानस में विज्ञान चेतना जागरण करने हेतु हिन्दी में विज्ञान का समावेश बहुत जरूरी है।

कार्यक्रम के आरंभ में संस्थान के निदेशक डॉ. एस. एस. सी. शेनॉय ने कहा कि समुद्र विज्ञान एवं प्राकृतिक आपदा संबंधी सूचना संस्थान द्वारा हिन्दी एवं 8 अन्य प्रादेशिक भाषा में उपलब्ध करायी जा रही है। संस्थान के वैज्ञानिक भी तकनीकी क्षेत्र हिन्दी को बढ़ावा दे रहे हैं तथा हिन्दी के क्षेत्र में इंकॉइस कालान्तर में भी हिन्दी में विज्ञान में अग्रसर रहेगा। कार्यक्रम के विशेष अतिथि केंद्रीय विश्वविद्यालय, हैदराबाद के हिन्दी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. रवि रंजन ने कहा कि हिन्दी विश्व स्तर पर अन्य भाषाओं के अपेक्षा प्रथम स्थान प्राप्त कर चुकी है। संस्थान के राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष एवं वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी के. के. वी. चारी ने कहा कि भारत सरकार के गृह मंत्रालय के निर्देशानुसार संस्थान के अंतर्गत राजभाषा का प्रयोग निरंतर बढ़ा है। उन्होंने बताया कि हिन्दी भाषा का सीखना और बोलना राष्ट्रीय एकता की एक महत्वपूर्ण कड़ी है। पखवाड़ा समारोह में संस्थान के वैज्ञानिकों ने अपने तकनीकी आलेख, प्रस्तुतिकरण आदि में प्रस्तुत किये तथा विजेताओं को संस्थान के विभिन्न प्रतियोगिताओं के निदेशक ने पुरस्कृत किया। कार्यक्रम का संचालन हिन्दी समिति के डॉ. सत्यप्रकाश वेंकट शेषू, सुप्रित और अनिल कुमार ने किया।

हिन्दी का प्रचार अत्यंत आवश्यक

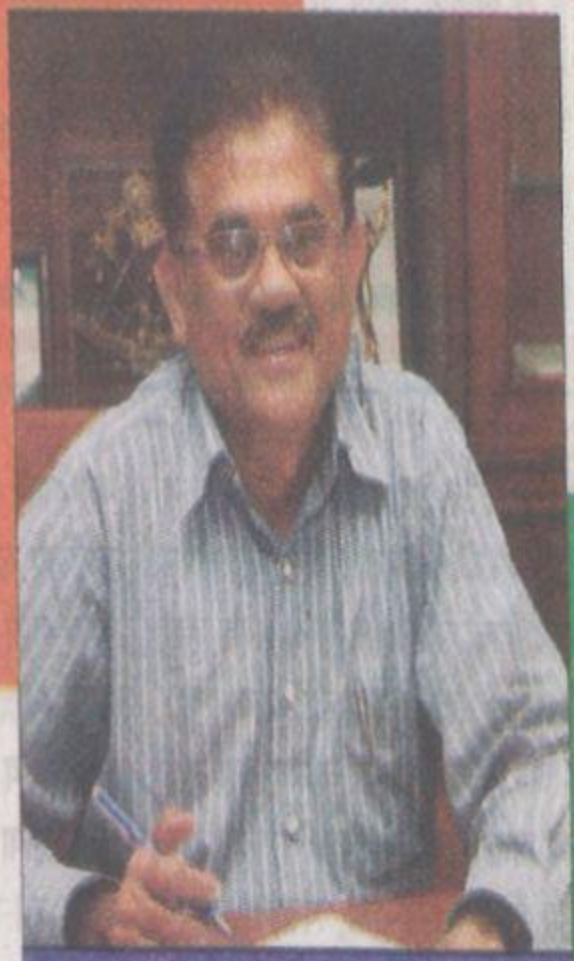

डॉ. एसएससी शेनॉय
निदेशक, इंकॉइस
हैदराबाद.

हिन्दी दिवस के अवसर पर मेरी शुभकामनाएँ! यदि भारतीय लोग कला, संस्कृति और राजनीति में एक रहना चाहते हैं, तो इसका माध्यम हिन्दी ही हो सकती है। - चक्रवर्ती राजगोपालाचारी

किसी ने सत्य ही कहा कै कि भाषा केवल संचार का माध्यम नहीं बल्कि देश की अस्मिता की पहचान है, इसी बात का ध्यान रखकर भारत सरकार ने 14 सितंबर को हिन्दी दिवस घोषित किया है। इस दिवस को मनाने के लिए सरकारी संस्थानों में अनेक कार्यक्रम आयोजित किये जाते रहे हैं, पर ज़रूरी है कि हम अपनी राष्ट्रभाषा को जीवंत रखने के लिए किसी औपचारिक हिन्दी दिवस के बाद भी हिन्दी का रोज़मर्रा के काम में प्रयोग करें।

भारतीय राष्ट्रीय महासागर सूचना सेवा केंद्र (इंकॉइस) में कई सेवाएँ हैं, जो कि जनसमूह की भलाई और सुरक्षा की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है। हमारे संस्थान का हमेशा से एक लक्ष्य रहा है कि वैज्ञानिक शोध कार्य की जानकारी हम सहज और सरल भाषा में जन-जन तक पहुँचा पाएँ। हम सच्चे देशभक्त की तरह सतत प्रयास करने होंगे कि हम हिन्दी को संपर्क भाषा के तौर पर विकसित कर पाएँ और साथ में यह भी ध्यान रखें कि हिन्दी व्यावहारिक जीवन में भी अत्यंत आवश्यक है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि भारत की अखंडता और व्यक्तित्व बनाए रखने के लिए हिन्दी का प्रचार अत्यंत आवश्यक है। अगर हमें भारत को एक समृद्ध राष्ट्र बनाना है तो राष्ट्रभाषा हिन्दी एक महत्वपूर्ण माध्यम हो सकती है।

गर्व से कहें - सब हिन्दी पढ़ें, देश आगे बढ़े।